शब्द–ब्रह्म

भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

ISSN 2320 – 0871

17 मई 2013

सिक्कों के आधार पर इतिहास की संरचना

यादव राकेश पारसनाथ, डॉ अजीत कुमार यादव

गुरूकुल महाविद्यालय पत्थलगांव जिला-जशपुर) छ.ग.

शोध संक्षेप

मनुष्य सभ्यता के विकास के साथ वस्तुओं के विनिमय का विकास भी जुड़ा हुआ है। विनियम में मुद्राओं का स्थान महत्वपूर्ण है। मुद्राओं के चलन के आधार पर इतिहास की रचना की जा सकती है। इसलिए इतिहास के अध्ययन में मुद्राशास्त्री की भूमिका भी बढ़ जाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में सिक्कों के आधार पर इतिहास की संरचना पर प्रकाश डाला गया है।

मुद्रा परिभाषा एवं अर्थ :मुद्राशास्त्र दो शब्दों से बना है। ग्रीक के Nomisma तथा लैटिन के Numisma इनका शब्दार्थ Current coin है। अर्थात् ऐसे सिक्के जो तत्कालीन समय में प्रचलन में हैं एवं जब उनका अध्ययन किया जाता है, तो वे "मुद्राशास्त्र" के अन्तर्गत आते हैं। मुद्राशास्त्र अध्ययन के अन्तर्गत वे सभी विनिमय की वस्तु जो व्यापार, वाणिज्य की दृष्टि से प्रयोग में लायी जाती हैं। इस प्रकार सिक्के जो मुख्यतः धातु से निर्मित होते हैं, उनका अध्ययन हम मुद्राशास्त्र के अन्तर्गत करते हैं। अब प्रश्न यह उठता हैं कि मुद्रा की आवश्यकता क्यों पडी ? जैसा कि मुद्रा की उपर्युक्त परिभाषा से यह स्पष्ट हो जाता है कि मुद्रा की आवश्यकता मुख्य रूप से समाज के ऐसी जरूरत से जुडी है, जो वस्तुओं के विनिमय को और अधिक सुगम बनाना चाहते थे। जैसे -जैसे सामाजिक संगठनों का विकास होता गया वैसे -वैसे विनिमय की प्रक्रिया में जटिलता आने लगी। अतः उस समय उस माध्यम की आवष्यकता हुई, जिससे आसानी से वस्तु विनिमय किया जा सके। इस प्रक्रिया में एक निश्चित धातु का मूल्य निर्धारित हुआ होगा। ऐसा होने के बाद उसे एक स्वरूप दिया गया होगा। सम्भवतः इसी प्रकार मुद्राओं का प्रचलन प्रारम्भ हुआ होगा।

सिक्कों)मुद्राओं (की प्रचीनता- मुद्राशास्त्र की विषय वस्तु विश्व के प्रत्येक भाग में अलग-अलग हो सकती है, क्योंकि कहीं इनका प्रचलन पहले मिलता है, तो कहीं बाद में मिलता हैं। अतः हमें किसी भी देश के इतिहास को सिक्कों के आधार पर निरूपित करने के पूर्व हमें उस क्षेत्र के सिक्कों की प्राचीनता का निर्धारण कर लेना चाहिए इसी सन्दर्भ में हम "सिक्को के आधार पर इतिहास जानने " से पूर्व भारत में उनके प्रचलन की प्राचीनता को निर्धारित करेंगे। सिक्कों के प्रचलन की प्राचीनता का निर्धारण एक कठिन समस्या हैं। क्योंकि किसी भी प्रकार के साक्ष्य में इस प्रकार का स्पष्ट उल्लेख नही प्राप्त होता है कि इसी काल से सिक्कों का प्रचलन प्रारम्भ हुआ। अतः ऐसी स्थिति में सिक्कों के प्रचलन की प्राचीनता का निर्धारण पुरातात्विक साक्ष्य के आधार पर करने का प्रयास किया गया है।

पुरातात्विक साक्ष्य के आधार पर - नव पोषाण काल -भारतीय उपमहाद्वीप में वस्तु विनिमय के स्पष्ट प्रमाण 'नव प्रस्तर'काल से

मिलने लगते हैं। ऐसी अनेक वस्तुएं प्राप्त हुई हैं, जिनके आधार पर वस्तु विनिमय आधारित व्यापार की पुष्टी होती हैं। लेकिन इस स्तर से अन्य किसी भी प्रकार के धातु संबंधी प्रमाण नही मिलते हैं। जिससे यह माना जाये की मुद्रा जैसी किसी प्रणाली का प्रचलन था। अतः इस काल में वस्तुओं का आदान-प्रदान वस्तु विनिमय के आधार पर ही होता था।1

सिन्धु सभ्यता -इस काल के विभिन्न पुरास्थलों से जैसे - हड़प्पा, मोहनजोदडो, चंहुदडों, लोथल, और कालीबंगा इत्यादि से बडी मात्रा में चीनी मिट्टी अथवा सेलखडी)सम्भवतः एक प्रकार का पत्थर (से निर्मित मुद्रायें प्राप्त हुई हैं। इन मुदाओं के एक ओर कुछ अक्षर और दूसरी और कई प्रकार के चित्र अंकित हैं। जैसे -पशुओं की आकृति आदि। परन्तु इस काल का कोई भी साहित्यिक साक्ष्य नहीं उपलबध होने के कारण यह नहीं स्पष्ट हो पाता कि इनका प्रयोग वस्तु विनिमय के आधार स्वरूप किया जाता था अथवा मुहर या ताबीज मुद्रा के रूप में प्रयोग होता था। 2

वैदिक काल :इस काल के इतिहास की सूचना हमें पुरातात्विक साक्ष्यों की अपेक्षा साहित्यिक स्रोत से ही प्राप्त होती है। इस काल में वस्तु विनिमय अथवा मुद्रा के प्रचलन का उल्लेख मिलता है। उदाहरणार्थ वैदिक ग्रंथ के एक मंत्र में कहा गया है कि इन्द्र की एक मूर्ति को 100 सिक्कों के देने के बाद भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। लेकिन वह केवल 10 गायों के बदले प्राप्त किया जा सकता है। विनिमय पद्धति में गाय देकर इन्द्र की मूर्ति प्राप्त करना ही यह एक ऐसी निश्चित वस्तु का संकेत हैं, जो सम्भवतः मुद्रा के रूप में विनिमय का कार्य करती रही होगी। 3 इसी प्रकार का एक अन्य उल्लेख पाणिनी ने भी किया है। उन्होंने पूर्व वैदिक और वैदिक काल में दो प्रकार की वस्तुओं का प्रयोग विनिमय के रूप में बताया है।)1) कौड़ी)2) गाय। इस प्रकार कौड़ी एवं गाय का उपयोग विनिमय साधन के रूप में वैदिक काल में प्रचलित थे, जिनके आधार पर आदान-प्रदान किया जाता था।) 1) लेकिन वैदिक साहित्य में कुछ ऐसे शब्द भी मिलते हैं, जैसे - निष्क, शतमान, पण्य, हिरण्य जो मूल्यवान धातु जैसे स्वर्ण व इससे बनी वस्तु की ओर संकेत करते हैं। उदाहरण के लिए निष्क को कई विद्वानों ने स्वीकार किया है, जिसे सोने का एक निश्चित धातु पिण्ड स्वीकार किया है। जैसे -आर .डी . भण्डारकर, इन्हें सिक्कों का प्रचलित रूप मानते हैं। 4

एन.बी.पी .काल : इस काल मे हस्तिनापुर, मथुरा, कौशाम्बी, राजघाट, उज्जैन तथा बहाल के उत्खननों से कई सिक्के प्राप्त हुए हैं। इन सिक्कों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सर्वप्रथम इस काल में विनिमय के माध्यम के रूप में मानक सिक्कों का प्रचलन प्रारम्भ हो गया था। इस काल से दो प्रकार के सिक्के प्राप्त होते हैं, जो चांदी अथवा तांबे से निर्मित थे।)1) चांदी या तांबे के बने आहत सिक्के। इन्हें पंच मार्क क्वाइन भी कहा जाता है। (2) चांदी अथवा तांबे से निर्मित लेख रहित ढलुवां सिक्के। 5

इन मानक सिक्कों के प्रचलन से स्पष्ट है कि इस काल में कोई नगरीय क्रान्ति अवश्य हुई होगी, जिससे व्यापार और वाणिज्य के लिए इन मानक सिक्कों के प्रचलन की आवश्यकता पड़ी होगी।

सिक्कों के आधार पर इतिहास की संरचना : प्राचीन भारतीय इतिहास का स्वरूप साहित्यिक ग्रंथ या अभिलेख से ज्ञात होता है कि राजाओं के नाम, वंशावली आदि का अनुमोदन उनके द्वारा

जारी किये गए सिक्कों के आधार पर किया जा सकता है। इसी प्रकार जब कई राजवंश के राजाओं का नाम नहीं ज्ञात होता, लेकिन इनके सिक्के मिलते हैं, तब अन्य स्रोतों के आधार पर इनके नाम व वंशावली को परिकृत कर लिया जाता है। इतिहास के ऐसे पक्ष जो अर्थव्यवस्या अथवा राजनैतिक सत्ता से जुडे होते हैं उनकी जानकारी भी हमें मुख्य रूप से सिक्कों के विश्लेषण से ज्ञात हो जाती है। इस प्रकार प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं समाज के स्वरूप के कई पक्षों के विस्तार के लिए सिक्के महत्वपूर्ण हैं। जैसे -राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक-आर्थिक, भौगोलिक, इतिहास की जानकारी के लिए।

(1) राजनैतिक इतिहास की दृष्टि से :राजनैतिक इतिहास की संरचना में जिस प्रकार अभिलेख उल्लेखनीय हैं, उसी प्रकार सिक्के भी उल्लेखनीय हैं। उदाहरण स्वरूप जैसा कि यूनानी लेखकों के विवरणों से ज्ञात होता है कि प्रथम-द्वितीय शताब्दी ई.पूर्व में पश्चिम - उत्तर भारत में चार या पांच हिन्द - यूनानी शासकों की संख्या थी। जब इन हिन्द यूनानी शासकों के सिक्कों का विश्लेषण किया जाता है, तो ऐसे 37 व्यक्तियों के नाम मिलते हैं, जिन्होंने अपने नाम से सिक्के जारी करवाये, जिसके आधार पर हिन्द-यूनानी शासकों के शासन के साथ- साथ कुछ अन्य प्रभावशाली लोग भी सिक्के जारी करते थे। इसी तरह से सीथियन पर्शियन के राजनैतिक इतिहास निर्माण के भी सिक्कों का महत्वपूर्ण योगदान स्पष्ट होता है। 6

(2) प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था की दृष्टि से : प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था की झलक सिक्कों के अध्ययन से प्राप्त होती है। जैसे - मालवा, यौधेय ये ऐसे गणराज्य थे, जो छोटे-छोटे समृद्ध व्यक्तियों द्वारा शासित थे। इनके सिक्कों पर नैगम -निगम लिखा हुआ मिलता है। इसी प्रकार का एक अन्य उदाहरण माध्यमिका देश से प्राप्त होता है । जहां से शि.वि .जनपद और राजन्य जनपद नाम के सिक्के मिलते हैं। जो गणराज्य के रूप में विद्यमान थे। जिसकी पुष्टि उनके नाम के सिक्कों पर उपलब्ध होती है। अतः प्राचीन भारत में ऐसे सिक्के जो विशिष्ट राजवंशों द्वारा नहीं जारी किये गए थे उनमें तीन प्रकार के शासन का उल्लेख मिलता है।)1) नैगम या निगम)2) जनपद)3) गणराज्य। इसी प्रकार कई बार राजवंशों द्वारा जारी किए गए सिक्कों से भी ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जो प्रशासनिक व्यवस्था का उल्लेख करते हैं। जैसे - चन्द्रगुप्त प्रथम के द्वारा जारी किया गया सिक्का जिसमें मुख्य पृष्ठ पर राजा को रानी के साथ दिखाया गया है। जबकि पृष्ठ भाग पर लिच्छवयः लेख उत्कीर्ण है। ये जो प्रमाण हैं इसमें कुमार देवी के लिच्छवि राजवंश के साथ सम्बन्ध को उजागर किया गया है। जिसको इतिहासकार ये मानते हैं कि सम्भवतः कुमारदेवी द्वारा लिच्छवि क्षेत्र के ऊपर शासन किया जाता था और गुप्त इतिहास के प्रारम्भिक चरण के लिए इन सिक्कों का विषेष महत्व है। सिक्कों के आधार पर शासकों के भौगोलिक सीमा का निर्धारण एवं उनकी व्यावसायिक उपलब्धि की जानकारी प्राप्त होती है। इस दृष्टि से ऐसे अनेक उदाहरण प्राचीन भारतीय इतिहास में मिलते हैं। सिक्कांे की प्राप्ति के आधार पर उनकी भौगौलिक सीमा का निर्धारण हुआ। जैसे यौधेय गणराज्य का उल्लेख अभिलेखों एवं महाभारत में मिलता है। लेकिन इन साहित्यिक एवं अभिलेखीय विवरणों मंे इस राज्य की वास्तविक सीमा के बारे में ठीक-ठीक विवरण नहीं मिलता है। इनके सिक्कों के विस्तार के आधार पर इनके साम्राज्य की सीमा सतलज

नदी के किनारे तक मान ली गई है, जो वर्तमान समय का पंजाब क्षेत्र है।
इसी प्रकार व्यापारिक क्षेत्र के निर्धारण में भी सिक्कों से कई महत्वपूर्ण सूचनाएं प्राप्त होती हैं। जैसे -कुषाण कालीन सिक्कों का विस्त ार गांगेयघाटी में काफी पूर्व तक मिलता है) पूर्वी, उत्तर प्रदेश, बिहार, ,बंगलादेश (जिसके कारण ऐसे क्षेत्रों को कुषाण व्यापार एवं सांस्कृतिक क्षेत्र के रूप में माना जाता है।
(4) सिक्कों का धार्मिक दृष्टि से महत्व :धार्मिक दृष्टि से सिक्कों का बहुत महत्व है। धार्मिक दृष्टि से सिक्कों से दो प्रकार की सूचनाएं प्राप्त होती हैं।) 1) ऐसे विदेशी शासक जो भारत में आये और अपने देश के देवी देवताओं का अंकन किया। जैसे हिन्द -यूनानी शासकों के सिक्कों पर हिन्द यूनानी देवताओं का चिह्न मिलता है। द्वितीय वर्ग में हम उन विदेशी शासकों को रखते हैं। जिन्होंने भारतीय धर्म को अपना कर उसे अपने मुद्राओं पर अंकित किया। जैसे -कुषाण शासक विम कैडफिसेस ने 'माहेष्वर "की उपाधि धारण की एवं साथ ही मुद्राओं पर उमा शिव की आकृति को अंकित करवाया। इसी प्रकार का एक अन्य उदाहरण उसके उत्तराधिकारी कनिष्क का प्राप्त होता हैं, जिसने स्वंय बौद्ध धर्म को ग्रहण किया था। अतः उसकी मुद्राओं पर अन्य विदेशी देवी देवताओं के साथ-साथ बुद्ध का रूप भी अंकित है। 7
विदेशी शासकों के अतिरिक्त इस प्रकार के कई अन्य उदाहरण हमें भारतीय शासकों के भी प्राप्त होते हैं जैसे -गुप्त शासको ने वैष्णव धर्म को अपनाया था। इसकी सूचना उनकी मुद्राओं से भी प्राप्त होती है।
स्रोत के रूप में सिक्कों का उपयोग करते समय हमें निम्नलिखित बातों की तरफ विशेष ध्यान देना चाहिए। यह सत्य है कि प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्धारण में सिक्कों का अति महत्वपूर्ण योगदान है। लेकिन इस रूप में इनकी कई सीमाएं भी हैं।)1)सिक्के ऐसी वस्तुएं हैं, जो आसानी से अपने मूल स्थान अथवा क्षेत्र से अन्यत्र दूसरे स्थान पर आसानी से स्थानान्तरित हो जाती हैं। जैसे व्यापार के माध्यम से विजित क्षेत्र से लूट के रूप में प्राप्त करके अथवा उपहारादि के रूप में। अतः ऐसे में सिक्कों से इतिहास निर्धारण करते समय विशेष सावधानी रखनी चाहिए।)2) प्राचीन भारतीय सिक्कों के जो संग्रह उपलब्ध होते हैं उसमें तिथि और संवत उपलब्ध नहीं होते हैं।)3) कई बार एक ही प्रकार की राजकीय उपाधि एवं नाम सिक्कों पर मिलते हैं। इससे भी इतिहास निर्धारण में कठिनाई हो सकती है।)4) ऐसा भी होता हैं कि कई बार पूर्व के शासक की मुद्राओं का प्रयोग बाद के शासकों ने भी किया है। जैसे -सातवाहनों ने अनेक विदेशी शासकों के सिक्कों को जारी किया। इससे भी इतिहास निर्धारण में कठिनाई हो सकती है। अतः हमें सिक्कां े से इतिहास निर्धारित करते समय आती सावधानी रखनी चाहिए। जैसे -धातु का ध्यान, विषय वस्तु का ध्यान, तकनीक का का ध्यान, प्राप्ति के स्तर का ध्यान रखना चाहिए इत्यादि।

निष्कर्ष :फिर भी हम यह कह सकते हैं कि यदि सावधानीपूर्वक प्राचीन सिक्कों का अध्ययन किया जाय तो हमें निश्चित रूप से प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्धारण एवं विस्तार में सहायता प्राप्त होगी। इनकी उपयोगिता को इस प्रकार समझा जा सकता है कि वर्तमान समय में कई आधुनिक इतिहासकारों ने प्राचीन भारतीय इतिहास को सिक्कों के आधार पर लिखने का

प्रयास किया है। जैसे -डी.सी .सरकार। इनके अतिरिक्त भी कई अन्य इतिहासकारों ने भी मुद्रा के आधर पर इतिहास निर्धारण का प्रयास किया है। जैसे परमेष्वरीलाल गुप्त, अल्टेकर आदि। अतः भारतीय इतिहास की संरचना में मुद्राओं का अतिमहत्वपूर्ण योगदान है।

सन्दर्भ

1- डाँ .जय नरायण पाण्डेय : पुरातत्त्व विमर्श
2- किरण कुमार थप्पल्याल :सिन्धु सभ्यता
3- वासुदेव शरण अग्रवाल :भारतीय कला
4- राधा कुमुद गुखर्जी :1. हिन्दू सभ्यता 2. प्राचीन भारत
5- दामोदर धर्मानंद कोसांबी :प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता (अनुवादक -गुणाकर मुले(
6- डॉ.परमेश्वरी लाल गुप्त : भारत के पूर्वकालिक सिक्के
7- डॉ .ओमकारनाथ सिहं :गुप्तकालीन उत्तर भारतीय गुद्रायें।